© 2025 IJRTI | Volume 10, Issue 11 November 2025 | ISSN: 2456-3315

दीनदयाल उपाध्याय के जीवन में वैराग्य और संन्यास दर्शन : ग्रहों की भूमिका

Deendayal Upadhyay ke Jivan men Vairagya aur Sanyas Darshan : Grhon Kee Bhumika

Dr. Munish Kumar

Doctorate from Centre for Deendayal Upadhyay Studies,
Central University of Himachal Pradesh,
Dharamshala, Himachal Pradesh, India

astrowaves2013@gmail.com

सारांश:

दीनदयाल उपाध्याय ने वैराग्य व संन्यास भाव में रहकर अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के उत्थान हेतु समर्पित किया। दीनदयाल उपाध्याय ने कर्म को छोड़कर नहीं कर्म को करके संन्यासी की तरह जीवन को जिया। उन्होंने देश और धर्म के लिए कर्म किया। संन्यास त्याग को दर्शाता है, संन्यासी वह है जो एक गृहस्थ की सांसारिक महत्वाकांक्षाओं से ऊपर उठ गया है और इच्छाओं से उत्पन्न कार्यों का त्याग और ज्ञान के मार्ग को अपनाने के योग्य है। ज्योतिष में संन्यास योग कुण्डलियों में देखी जाने वाली ग्रह स्थितियां या संयोजन है जो उन योगों के साथ पैदा हुए व्यक्तियों द्वारा सांसारिक भौतिक जीवन के त्याग का संकेत देते है। प्रव्रज्या योग को भी संन्यास योग कहा जाता है। दीनदयाल उपाध्याय ने शरीर और संसार के प्रलोभन से रहित, समर्पण, सेवा, स्वाध्याय, साधना युक्त जीवन को जिया। उनके लिए संन्यास त्याग नहीं बल्कि बलिदान था और सेवा के लिए समर्पित जीवन था। ज्योतिष मतानुसार दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुण्डली में ग्रहों का संयोजन संन्यास योग को प्रकट करता है लेकिन वर्तमान सन्दर्भ में यह संसार का त्याग नहीं है यह स्वार्थ का त्याग है।

मुख्य शब्द: दीनदयाल उपाध्याय, संन्यास, वैराग्य, ज्योतिष, ग्रह

प्रस्तावना

दीनदयाल उपाध्याय कुशल संचालक, कुशल संगठनकर्ता, विचारक, राजनीतिज्ञ और साहित्यकार थे । वे सादा जीवन उच्च विचार की जीती जागती प्रतिमा थे । दीनदयाल उपाध्याय का जीवन समग्र समाज के लिए अर्पित था। नियति ने उन्हें बचपन से ही घोर संकटों से जकड़ा हुआ था, फिर भी वे समस्त संकटों व चुनौतियों को पार करते हुए 20वीं सदी के ऐसे चिंतक एवं विचारक हुए, जिन्होंने भारतीय सनातन चिंतनधारा को गहराई से प्रभावित किया। दीनदयाल उपाध्याय बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक समर्पित, ईमानदार और आदर्श स्वयंसेवक थे। दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक चिंतन मानवीय दृष्टिकोण पर आधरित है। दीनदयाल उपाध्याय ने अपने सिद्धांतों और मूल्यों से कभी समझौता नहीं किया, जो उन्होंने मनुष्य और मानव जाति के लिए पोषित किया। दीनदयाल उपाध्याय ने बचपन में इतना अधिक मृत्यु का अनुभव किया जो कि उनके जीवन में वैराग्य व संन्यास भाव उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त था *(शर्मा,2018)*। दीनदयाल उपाध्याय ने वैराग्य व संन्यास भाव में रहकर अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के उत्थान हेतु समर्पित करने का निर्णय लिया।

साहित्य समीक्षा

महेश चन्द्र शर्मा ने दीनदयाल उपाध्याय के आलेखों, भाषणों, बौद्धिक वर्गों में दिये गये वक्तव्यों एवं विविध संवादों और देश की तात्कालिक समस्याओं का विवेचन को 15 खंडों के सम्पूर्ण वांग्मय में प्रस्तुत किया है। उपलब्ध साहित्य के आधार पर साहित्य समीक्षा से यह सामने आया है कि दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन की मूल अवधारणाओं जैसे व्यष्टि, समिष्टि, संस्कृति, चिति, विराट, आदि पर भारतीय दर्शन का प्रभाव है जिसको दीनदयाल ने सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक विचारों के रूप में प्रस्तुत किया है।

साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट है कि दीनदयाल उपाध्याय के जीवन और उनके चिंतन को लेकर ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक दृष्टि और मौलिक चिंतन पर शोध कार्य हुए है लेकिन ज्योतिषीय दृष्टिकोण से अभी तक दीनदयाल उपाध्याय के जीवन पर संन्यास और वैराग्य से संबंधित शोध कार्य नहीं हुआ है। यह अध्ययन शोध समस्या की दृष्टि से नवीन है।

शोध उद्देश्य और प्रविधि

प्रस्तुत शोध गुणात्मक प्रकृति का है। शोध की गुणात्मक प्रकृति के आधार पर वैयक्तिक अध्ययन का प्रयोग कर समस्या का समाधान करने का प्रयास किया गया है। तथ्यों के संकलन के लिए द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है। प्रस्तुत शोध में दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुण्डली में स्थित जन्मकालीन ग्रहों के अनुसार संन्यास व वैराग्य दर्शन का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। संदर्भ हेतु एपीए स्टाइल (छठे संस्करण) का उपयोग किया गया है।

वैराग्य और संन्यास दर्शन

संन्यास एक विश्वव्यापी परम्परा है जिसने मानव की त्याग, वैराग्य एवं समर्पण की मूलभूत विचारधारा का संरक्षण किया है। संन्यास भौतिक इच्छाओं और पूर्वाग्रहों का त्याग द्वारा चिन्हित एक रूप है। यह भौतिक जीवन में अरुचि और अलगाव की स्थिति का भी प्रतिनिधित्व करता है। जब हम संन्यास परम्परा की बात करते है तब हम किसी ऐसे सम्प्रदाय की बात नहीं करते जो किसी विशेष प्रकार की विचारधारा से सम्बन्ध रखता हो बल्कि उस परम्परा की बात करते हैं जिसने युगों से चली आ रही शिक्षाओं तथा अनुभवों को संग्रहित कर आगे हस्तांतरित किया है। 'संन्यास' शब्द का तात्पर्य मानव कल्याण के लिए आपनी योग्यताओं और क्षमताओं का पूर्ण समर्पण है। संन्यास और वैराग्य दर्शन भारतीय धार्मिक और दार्शनिक परम्पराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है। संन्यास धार्मिक विवेक और साधना की ऊंचाई को प्राप्त करने का माध्यम है, जबकि वैराग्य जीवन के मानवीय और भौतिक बंधनों से निवृति का भाव है। यह व्यक्ति को अपनी आत्मा को प्राथमिकता देने और भौतिक संबंधों को छोड़ने की इच्छा की ओर संकेत करता है। वैराग्य व्यक्ति को आत्मज्ञान और मोक्ष की खोज में समर्थ बनाता है। संन्यास की पूरी अवधारणा 'स्वामी' शब्द में निहित है, जिसका अर्थ होता है स्वयं का मालिक। संन्यास का स्वरूप एक बहुत ही अनुशासनात्मक, सांमजस्यपूर्ण तथा समग्र जीवन शैली की आवश्यकता की ओर इंगित करता है *(सरस्वती, 2012)*।

ज्योतिषशास्त्र में संन्यास योग

ज्योतिषशास्त्र में संन्यास योग जन्म कुण्डली में ग्रहों की स्थिति का संयोजन है जिसमें व्यक्ति राजसी वैभव छोड़कर संन्यासी हो जाता है या फिर एक साधारण घर में जन्म लेकर भी युग प्रवर्तक संन्यासी हो जाता है। दूसरे शब्दों में भौतिक जीवन का त्याग ही संन्यास है। संन्यास योग को प्रव्रज्या योग के नाम से भी जाना जाता है। ज्योतिष के अनुसार जन्म कुण्डली में एक विशेष प्रकार का योग होने से ही व्यक्ति संन्यासी होता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार संन्यास योग तब उत्पन्न होता है जब चार या अधिक मजबूत ग्रह एक घर या राशि में एकत्रित होते हैं। विविध ऋषियों, मुनियों एवं आचार्यो ने संन्यास के सम्बन्ध में ज्योतिषीय सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है।

महर्षि पराशर के अनुसार संन्यास योग

महर्षि पराशर के अनुसार जब कुण्डली में चार या चार से अधिक ग्रह निकटस्थ स्थित हो, किसी एक राशि में हो तो इसे प्रव्रज्या योग या संन्यास योग कहते हैं। प्रव्रज्या योग होने पर योगकारक ग्रहों में सूर्य अधिक बली हो तो मनुष्य तपस्वी होता है। चन्द्रमा बलवान हो तो कपाली, शमशानादि में साधना करने वाला अघोरी होता है। मंगल बली हो तो लाल कपड़ो वाला

साधु होता है। बुध बलवान हो तो योगी। बृहस्पति हो तो परमहंस योगी होता है। शुक्र बलवान हो तो दीक्षित व शनि बली हो तो नागा साधु या जैन साधु होता है। महर्षि पराशर ने यह भी कहा है कि योग कारक ग्रह बलवान हो, लेकिन सूर्य के साथ अस्त हो तो दीक्षित संन्यासी नहीं होता है। इस योग में गृहत्यागी कहा जा सकता है। यदि योगकारक ग्रह अस्त व बलहीन हो तथा सूर्य बलवान हो तो सूर्य के अनुसार तपस्वी होना सिद्ध होता है *(पराशर, 2023)*।

मंत्रेश्वर के अनुसार संन्यास योग

संस्यास योग के सम्बन्ध में मंत्रेश्वर ने *फलदीपिका* में यह कहा है कि जब चार ग्रह एक साथ हो तो उन चारों में जो बली हो उस बली ग्रह की प्रव्रज्या जैसी प्रव्रज्या जातक की होती है। यदि उन चार ग्रहों में दसवें ग्रह का स्वामी हो तो उस दसवें घर के स्वामी के अनुसार प्रव्रज्या होती है। शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा अत्यन्त बलवान होता है। जब चन्द्रमा निर्बल हो और उसको लग्न का स्वामी देखता हो, ऐसा जातक यदि तपस्वी हो तो वह दुखित, शोकतप्त, धन और जन से हीन-कठिनता से भोजन और पान प्राप्त करेगा *(मंत्रेश्वर,1946)* ।

वराहमिहिर के अनुसार संन्यास योग

संस्यास योग के बारे में वराहमिहिर ने *बृहतजातक* में कहा है कि जन्म लग्न में किसी भी एक राशि में बलवान चार या पांच या छह या सात ग्रह हो तो संन्यास होने का योग सम्भव होता है। संन्यास का स्तर प्रव्रज्या कारक के बलानुसार होगा अर्थात पूर्ण बली हो तो पूर्ण संन्यासी, मध्य बली से मध्य संन्यासी इत्यादि। यदि प्रव्रज्या कारक ग्रह अन्य ग्रह से पराजित हो तो व्यक्ति प्रव्रज्या ग्रहण करके बाद में उसे त्याग देता है। संन्यास हेतु एक राशि में कम से कम चार ग्रहों की बलवान स्थिति अनिवार्य है। साधु संन्यासियों के अनेक भेद होने से किस प्रकार का संन्यासी होगा, एतदर्थ बलवान प्रव्रज्या कारकों में से भी सर्वाधिक बली मंगलादि ग्रह अलग-अलग प्रकार के संन्यासी होने के योग बनाते हैं *(वराहमिहिर, 2001)*।

संन्यास तथा पृथकता योग

होरा शतक पुस्तक में यह उल्लेख है कि राहु शनि तथा सूर्य इन तीनो ग्रहों में से कोई भी दो अथवा तीन ग्रह जिस किसी भाव पर दृष्टि युति द्वारा प्रभाव डाल रहें हो तो अवश्य ही उस भाव सम्बन्धी बातों से वह मनुष्य पृथक हो जाता है अर्थात उसको उन बातों का त्याग करना पड़ेगा। जैसे दशम भाव तथा उसके स्वामी पर सूर्य शनि, सूर्य राहु अथवा शनि राहु अथवा सूर्य शनि राहु की युति अथवा दृष्टि द्वारा प्रभाव पड़ता हो तो दशम भाव के कार्यों से मनुष्य को हटना पड़ेगा। समय का निश्चय दृष्टि तथा युति के बल के तारतम्य से होता है। इस प्रकार ग्रहों का प्रभाव सप्तम भाव, सप्तमेश तथा सप्तम भाव कारक शुक्र अथवा गुरू पर पड़ता हो तो स्त्री अथवा पुरूष से पृथकता हो जाये, द्वितीय भाव पर पड़ता हो तो धन से वियोग, तृतीय भाव पर हो तो भ्राता तथा मित्रों से पृथकता, चतुर्थ भाव पर हो तो जन्म भूमि से वियोग, बार-बार घर छोडना, पंचम भाव पर हो तो पुत्र से वियोग, षष्ठ भाव पर हो तो मामा से वियोग, अष्टम भाव पर हो तो पिता के बड़े भाई से वियोग, नवम भाव पर हो तो धर्म से वियोग, एकादश भाव पर हो तो कार्य-धंधे का बार-बार छोड़ना, द्वादश भाव पर हो तो संसार के भोगों का त्याग अर्थात संन्यासी हो जावे। शनि सूर्य तथा राहु वृद्ध ग्रह होने के कारण विलम्ब से जीवन का अंत करते है परन्तु संबंधियों तथा गुणों से प्रथम पृथकता देते है *(भसीन,2000)*।

संन्यास योग कारक शनि

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सौरमण्डल में नौ ग्रह विद्यमान है जो समस्त ब्रह्माण्ड, जीव एवं सभी क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं, जिसमें शनि की महत्वपूर्ण भूमिका है। शनि को तपकारक ग्रह माना गया है। शनि की कृपा के बिना कोई भी साधक या संन्यासी उन्नति के शिखर को नहीं छू सकता है। यह साधक को तपाता है और कुंदन की भांति निखारता है। शनि चिंतनशील, गहराइयों में जाने वाला, योगी संन्यासी एवं खोज करने वाला ग्रह है। शनि के साथ सूर्य जो नवग्रहों में राजा एवं अग्नि तत्व ग्रह है एवं मानव शरीर संरचना का कारक है, राहु जो शनि के समान ही ग्रह है, शनि के साथ सूर्य, राहु पृथकता जनक प्रभाव रखते हैं। इनमें से कोई दो ग्रह जिस भाव आदि पर निज प्रभाव डाल रहे हो तो उस भाव से पृथकता हो जाती है *(शास्त्री,2016)*।

दीनदयाल उपाध्याय का जन्म विवरण : जन्म: 25 सितम्बर,1916 ; इष्टकाल: 17 घटी ; अक्षांश: 026*54' उत्तर ;रेखांश: 075*36' पूर्व

ग्रह स्थिति

सूर्य 159* 11' चन्द्र 135* 56' मंगल 198* 29' बुध 177* 40' गुरु 11* 09' शुक्र 113* 40' शनि 95* 52' राहु 274* 17' केतु 94* 17' लगन 248* 34'

भोग्यदशा शुक्र 16 वर्ष 01 माह 02 दिन

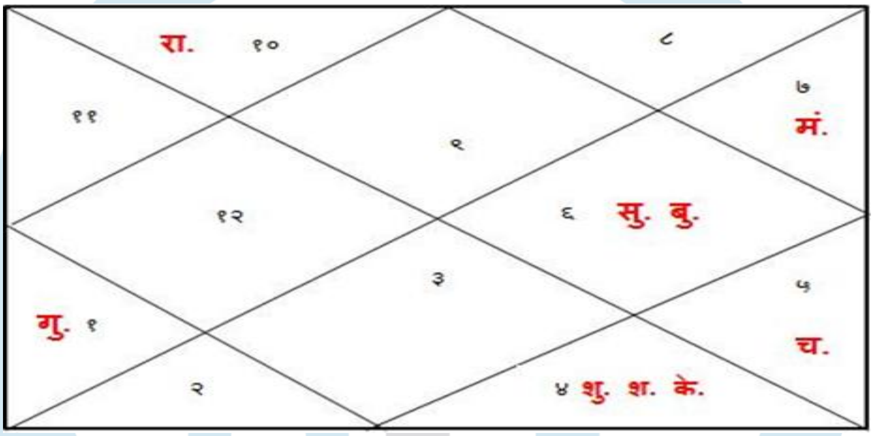

दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुंडली

दीनदयाल उपाध्याय के जीवन में वैराग्य और संन्यास दर्शन

दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुण्डली में लग्न भाव में धनु राशि उदित है, जिसका स्वामी बृहस्पति पंचम भाव में स्थित है। द्वितीय एव तृतीय भाव मकर और कुंभ राशि का है जिसका स्वामी शनि अष्टम भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव में मीन राशि है जिसका स्वामी बृहस्पति पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव में मेष राशि है जिसका स्वामी मंगल एकादश भाव में है। षष्ठ भाव में वृष राशि है जिसका स्वामी शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। सप्तम भाव में मिथुन राशि है जिसका स्वामी बुध दशम भाव में है। अष्टम भाव में कर्क राशि है जिसका स्वामी चन्द्रमा नवम में स्थित है। नवम भाव में सिंह राशि है जिसका स्वामी सूर्य दशम भाव में है। दशम में कन्या राशि है जिसका स्वामी बुध दशम में ही स्थित है। एकादश भाव में तुला राशि है जिसका स्वामी शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। द्वादश भाव में वृश्चिक राशि है जिसका स्वामी मंगल एकादश भाव में है।

चार ग्रहों का संयोजन

दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुण्डली में चार ग्रह सूर्य, बुध शनि और राहु का युति और दृष्टि से आपसी सम्बन्ध है। इन ग्रहों की युति और दृष्टि सम्बन्ध दशम भाव से है। जिससे दीनदयाल उपाध्याय के जीवन में संन्यास और पृथकता योग की पुष्टि होती है।

दीनदयाल उपाध्याय की कुण्डली में दशम भाव तथा उसके स्वामी बुध पर शनि राहु की दृष्टि और सूर्य की युति का प्रभाव पड़ने से उन्हें राज्य, पदवी, मान आदि के लिए किसी भी प्रकार का मोह नहीं हुआ और स्वार्थ का त्याग करके उन्होंने दशम भाव के कर्म किये। इन ग्रहों में सूर्य और बुध के बली होने से उन्हें एक अनुशासित जीवन जीने वाला एक कर्म योगी बनाया। उपरोक्त ग्रहों के संयोजन से यह स्पष्ट है कि दीनदयाल के जीवन में संन्यास उनके उपन्यास जगदगुरू श्रीशंकराचार्य के पात्र शंकर की शैली का था जिसमें संन्यास का अर्थ संसार को छोड़कर वन में तपस्या करना नहीं है, कर्म को करना है, कर्म को छोड़ना नहीं और यह कर्म देश और धर्म के लिए करना है *(उपाध्याय,2021)*। समाज का भार बनकर जीवन व्यतीत करना तो संन्यास धर्म का आदर्श उन्होंने नहीं माना, कर्म संन्यास को उन्होंने प्रमुखता प्रदान की। उपरोक्त ग्रहों का संयोजन ही था जिससे दीनदयाल का मानना था कि कर्म के बिना धर्म की कोई निश्चित बुनियाद नहीं होती है। किसी भी देशकाल वातावरण में कर्म की प्रधानता सर्वोपरि होती है न कि तर्कों की। दीनदयाल उपाध्याय ने देश और समाज के लिए इस मार्ग को अपनाया।

इसलिए दीनदयाल का जीवन संन्यास और त्याग को दर्शाता है, जो एक गृहस्थ की सांसारिक महत्वाकांक्षाओं से ऊपर उठ गया है और इच्छाओं से उत्पन्न कार्यों का त्याग और ज्ञान के मार्ग को अपनाने के योग्य हुआ। दीनदयाल उपाध्याय ने वैराग्य व संन्यास भाव में रहकर अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के उत्थान हेतु समर्पित किया। दीनदयाल उपाध्याय के जीवन में संन्यास योग उनकी जन्म कुण्डली में ग्रह स्थितियों का संयोजन है जिसने उन्हें सांसारिक भौतिक जीवन के त्याग के लिए प्रेरित किया।

बृहस्पति-शनि की दृष्टि

दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुण्डली में शनि की अष्टम भाव से पंचम भाव में स्थित बृहस्पति पर दशम दृष्टि है। बृहस्पति विस्तार, विकास और आशावाद से जुड़ा है, जबकि शनि अनुशासन और जिम्मेदारी से जुड़ा है। शनि का बृहस्पति के साथ सम्बन्ध होने पर शनि अपेक्षाकृत अधिक शुभ फल देने वाला बन जाता है। बृहस्पति अध्यात्म और देव कारक है तो शनि वैराग्य, उदासी एकांत वास का कारक है। बृहस्पति सबसे अधिक लाभकारी ग्रह है जबकि शनि सबसे हानिकारक ग्रह है। लेकिन ये दोनों एक दूसरे के प्रति तटस्थ है। कुण्डली में शनि और बृहस्पति की दृष्टि से दीनदयाल को समाज और राष्ट्र हित के लिए नि:स्वार्थ कार्य करने के लिए सांसारिक बंधनों से दूर रहकर मन में वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

बृहस्पति-चन्द्रमा की दृष्टि

दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुण्डली में बृहस्पति की पंचम दृष्टि सिंह राशिस्थ चन्द्रमा पर है। बृहस्पति और चन्द्रमा (चन्द्र गुरू योग) के दृष्टि सम्बन्ध ने कमजोर लोगों की मदद करने के लिए करुणा, उदारता और अच्छे कार्य करने की इच्छा को इंगित किया। बृहस्पति की दृष्टि से चन्द्रमा पर पड़ने से कई प्रकार के सकारात्मक प्रभाव दीनदयाल के जीवन में हुए जिसने उन्हें कर्म संन्यास में भावनात्मक संतुलन एवं स्थिरता को बनाया और जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण को आशावादी, उदार और दयालु स्वभाव का बनाया। सिंह राशिस्थ चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि से उनको प्रसिद्धि प्राप्त हुई *(वराहमिहिर,2001)*।

उपरोक्त सूर्य, शनि, राहु और बुध चार ग्रहों का संयोजन और बृहस्पति-चन्द्रमा, बृहस्पति-शनि के दृष्टि संबंध से ही दीनदयाल उपध्याय की युवावस्था में वैराग्य और संन्यास भाव का उद्गम हुआ।

निष्कर्ष

ज्योतिष शास्त्रानुसार दीनदयाल उपाध्याय के जीवन में संन्यास योग उनकी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों का संयोजन है जिसने उन्हें सांसारिक भौतिक जीवन के त्याग के लिए प्रेरित किया। दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुण्डली में सूर्य, बुध, शनि, राहु और शुक्र, शनि, केतु, राहु की युति और दृष्टि संबंध के संयोजन ने संन्यास और वैराग्य भाव को प्रबल किया। इन ग्रहों के प्रभाव से संसार के भोगों से दीनदयाल उपाध्याय को विरक्ति हुई। संन्यास योग का संबंध दशम भाव में होने से दीनदयाल उपाध्याय को पद और प्रतिष्ठा के लिए किसी भी प्रकार का मोह नहीं हुआ और उन्होंने स्वार्थ का त्याग करके देश और समाज के लिए कर्म किये। दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुण्डली में संन्यास योग कारक एवं तपकारक शनि की लग्नेश पर दशम और लग्नेश की चन्द्रमा पर पंचम दृष्टि है। इन ग्रहों के संयोजन और चन्द्रमा की महादशा में उनके मन में संन्यास और वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ। दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुण्डली में बृहस्पति की पंचम दृष्टि सिंह राशिस्थ चन्द्रमा पर है। बृहस्पति और चन्द्रमा के दृष्टि सम्बन्ध ने दीनदयाल के जीवन में कर्म संन्यास में भावनात्मक संतुलन एवं स्थिरता को बनाया और जीवन को देश व समाज के लिए समर्पित किया।

संदर्भ :

उपाध्याय, डी.डी. (2021)· जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.

कुमार, आर. (2010). *नोटेबल होरोस्कोप्स.* नई दिल्ली: सागर पब्लिशर्स·

केंपियन, एन·(2009)· *ए हिस्टरी ऑफ वेस्टरन एस्ट्रोलोजी* (खण्ड II): *द मेडीएवल एंड मॉडर्न वर्ल्डस.* यू के: कोंटीनूम.

गोयनका, के.के. (संपादक).(2017)· *पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन*·नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास·

झा, पी. (संपादक). (2019). *विचारकों की दृष्टि में एकात्ममानववाद*. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.

दुबे, आर.के. (2002). *भारतीय ज्योतिष विज्ञान*. नई दिल्ली : प्रतिभा प्रतिष्ठान.

प्रसाद, जी. (1956). *भारतीय ज्योतिष का इतिहास* (प्रथम संस्करण). लखनऊ: प्रकाशन ब्यूरो उत्तर प्रदेश सरकार.

पराशर. (2023). *बृहत् पाराशर होराशास्त्रम्,* खंड-1 (एस.मिश्र, व्याख्याकार). नई दिल्ली: रंजन पब्लिकेशन्स.

पराशर. (2023). *बृहत् पाराशर होराशास्त्रम्,* खंड-2 (एस.मिश्र, व्याख्याकार). नई दिल्ली: रंजन पब्लिकेशन्स.

पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति. (2022). पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक, धानक्या. जयपुर: लेखक.

बिहारी, बी.(2000). *सॉल्व यौर प्रोबलम एस्ट्रोलोजिकली*.नई दिल्ली:मोती लाल बनारसी दास.

भसीन, जे. (2000). *होरा शतक*.दिल्ली:आस्था प्रकाशन मंदिर.

मंत्रेश्वर. (1946). *फलदीपिका*. (जी.ओझा,व्याख्याकार). नई दिल्ली:मोती लाल बनारसी दास.

मुकर्जी, आर.एन. (2009).सामाजिक शोध व सांखियकी. दिल्ली : विवेक प्रकाशन.

विवेकानंद, एस. (2000). *कर्मयोग* (आर.शर्मा,अनुवादक). लखनऊ: सरस्वती पुस्तक भण्डार.

वराहमिहिर. (2001). *बृहज्जातकम* (एस.मिश्र,व्याख्याकार). नई दिल्ली: रंजन पब्लिकेशंस.

शास्त्री, एन.सी. (2015). *भारतीय ज्योतिष* (51 संस्करण). नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ.

शास्त्री, बी.एल. (2016). *सन्यास योग कारक शनि*. https://www.futuresamachar.com/hi/sannyas-yog-karaka-shani-8215 से 20.09.2023 को पुन: प्राप्त.

शर्मा, एम.सी. (2016). *दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय,* खंड 1-15. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.

शर्मा, एम.सी.(2018). *दीनदयाल उपाध्याय: कृतित्व एवं विचार*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.

सिंह, डी. (2018). *पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानव दर्शन: एक परिचय*.शोध मंथन, 9(4), 40-48.

सिंह, ए. (2019). *एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय*. नई दिल्ली: प्रभात पेपरबैक्स.

सरस्वती, एस.एन. (2012). *सन्यास दर्शन*. मुंगेर, बिहार : योग पब्लिकेशन ट्रस्ट.

त्रिवेदी, एम., & त्रिवेदी, टी. पी.(2007). *अ कम्पेडीयम ऑफ मेरिज,* खण्ड – I-II. दिल्ली : अल्फा पब्लिकेशनस.